,ihlkM 34

dfj, dy dh fQØ

शोध एवं आलेखः डा. अरविन्द दुबे

(सिग्नेचर ट्यून.....फेड्स आउट)

(शीर्षक गीत.....फेड्स आउट)

(ओपनिंग संगीत.....फेड्स आउट)

उद्घोषिकाःकुदरत ने हमें कितना कुछ दिया है । हवा, पानी, जंगल पहाड़ धरती वनस्पतियां, खनिज, ये नदियां ये झीलें, सब हमारे लिए ही तो बने हैं..... हमारे ही तो हैं। पर क्या हम सावधानी से इनके साथ पेश आ रहे हैं। क्या हम इनके साथ ज्यादती तो नहीं कर रहे.....सोचिए.....एक क्षण रूक कर सोचिए..... क्या हम इनसे जितना ले रहे हैं उतने से इनका अस्तित्व तो खतरे में नहीं पड़ता जा रहा है? अरे हम तो इन सबको नष्ट करने पर उतारू हैं! हम इन्हें उतना समय नहीं दे रहे हैं .....वैसी परिस्थितयां नहीं दे रहे हैं जिससे ये हमारे द्वारा किए गए नुकसान ही भरपाई कर पाएं.....हम इनकी निरंतरता भंग कर रहे हैं.....लगता है हम सिर्फ अपने बारे में ही सोच रहे हैं.....हम अपनी आने वाली पीढ़ियों के बारें में नहीं सोचते हैं। कल को खेती योग्य भूमि न रही तो वे क्या खाएंगे .....पीने का पानी न बचा तो..... वे कैसे जिएंगे .....जंगल न रहे खनिज न रहे तो? *(यहां इन शब्दों की ईको करवाएं)* .....हम तो अपनी जिंदगी काट ले जाएंगे पर हमारी अनेवाली पीढ़ियां.....? वक्त है अभी से सोचने का.....प्रकृति का दोहन इस प्रकार से हो कि हमारा काम भी चले.....प्रकृति का अस्तित्व भी अक्षुण रहे.....आइए आज की इस कड़ी में बात करते है इसी संवहनीय दोहन यानि कि संस्टनेबल प्रोक्योरमेंट के बारे में।

(दृश्य परिवर्तन संगीत.....फेड्स आउट)

रेडियो विज्ञान धारावाहिक के सफर पर आगे जाने से पहले मिलिए मेरे साथियों से। ये मेधा जो बी.एस.सी. की छात्रा है और ये विवेक..... ये इंटरमीडिएट में पढता है। इनकी मां सुनीता और पिता सुनील जो डिग्री कालेज में पढ़ाते हैं। आज यह परिवार अरुणांचल प्रदेश घूमने के इरादे से ईंटानगर आया है अपने मामा महेश बाधवा के यहां, जो यहां डाक्टर है .....जी वही ईंटानगर जो अरुणाचल प्रदेश की राजधानी है। तो चलो झांकते हैं इन डाक्टर महेश बाधवा के कमरे में।

n'" ;1

(ओपनिंग संगीत...फेड्स आउट)

स्थानःअस्पताल में डा0 महेश बाधवा का कमरा

(डा0 महेश बाधवा अपने कमरे में बैठे मरीज देख रहे हैं।)

महेश : ये दवा लिख दी है यहीं फार्मेसी पर मिल जाऐगी.........तीन दिन दवा खाकर तब बताना........ नेक्स्ट

(घंटी की आवाज)

विवेक : मेधाः *(समवेत स्वर में)* महेश मामा हम आ गए।

डा0 महेश : आओ विवेक, मेघा इधर आ जाओ, सुनीता दीदी और जीजा जी कहां है?

सुनीता और सुनीलः*(समवेत स्वर में)* हम भी आ गए।

डा0 महेश : आइए... दीदी प्रणाम, जीजा जी प्रणाम

सुनील : अरे महेश आज तो तुम बिजी होए फिर......?

विवेकः तो क्या महेश मामा हम आज घूमने नहीं जाएंगे?

महेश : नहीं विवेक, जरूर घूमने जाएंगे मेरे साथ के एक डाक्टर आने वाले हैं उनके आते ही हम चल देंगे। वैसे आज मैने दारेन खांडू जी को बुलाया है।

एक पुरूष स्वरः नमस्ते।

महेश : ये दारेन खांडू जी हैं। ये यहां कुदरत के नाम से एक स्वयंसेवी संगठन चलाते हैं। इनका संगठन पर्यावरण संरक्षण के कार्य में लगा हुआ है....और हां खांडू जी बड़ी अच्छी हिंदी बोलते हैं।

विवेक व मेघा : *(समवेत स्वर में)* नमस्ते खांडू अंकल।

महेशः खांडू जी ये सुनीता है मेरी बडी बहिन और ये सुनील मेरे बहनोई। ये मेधा है और ये विवेक, दोनों स्कूल में पढते हैं।

खांडूः नमस्ते सुनीता जी, नमस्ते सुनील जी, कैसा लगाा हमारा अरूणांचल?

सुनीताः लाजबाब.........खांडूजी लाजबाब।

महेशः विवेक, सुनीता दी, आप लोग साइड रूम में बैठकर गपशप करें। थोड़ी देर में मैं यहां से निपट कर आता हूॅ।

(दृश्य परिवर्तन संगीत...फेड्स आउट)

n”;2

(ओपनिंग संगीत...फेड्स आउट)

स्थानः डाक्टर बाधवा के कमरे का साइड रूम

(नेपथ्य में डाक्टर बाधवा की कमरे की चहल पहल सुनाई दे।)

विवेकः खांडू अंकल, अभी जब मैं महेश मामा के कमरे में आ रहा था तो मैने देखा बहुत सारे मरीजों का एक हाथ ही नहीं है.....

मेधा : किसी के पंजा नहीं है तो किसी की बांह और पंजा दोनो ही नहीं हैं, ऐसा क्यो?

खांडू : अच्छा वे लोग.....विवेक ये पछली पकडने वाले लोग हैं

विवकेः *(आश्चर्य से)* मछली पकड़ने वाले..... मछली पकड़ने का बांह और पंजा कटे होने से क्या संबंध है?

खांडू : है, दरअसल विवेक ये लोग ब्लास्ट फिशिंग करते हैं?

मेधा : ब्लास्ट फिशिंग....ये क्या खांडू अंकल?

खांडू : मेधा ये मछली पकड़ने का एक सरल मगर गैर कानूनी तरीका है।

सुनील : सरल और गैरकानूनी?

खांडू : हां सुनील जी, इसमें ये लोग एक किस्म के डायनामाइट या किसी अन्य विस्फोटक का प्रयोग करते हैं।

सुनीता : वह कैसे?

खांडू : सुनीता जी, ये लोग एक घरेलू विस्फोटक बनाकर किसी नदी या झील में फेंकते है जो पानी के अंदर जाकर फट जाता है।

मेधा : ओ हो.....

खांडू : इससे आघात तरंगे शॉक वेव्स उत्पन्न होती हैं।

विवके : शॉक वेव्स?

खांडू : हां विवेक, मछलियों के शरीरों में एक हवा भरी संरचना पाई जाती है जिसे स्विम ब्लैडर कहते हैं। इससे मछलियों को पानी में गहरे जाकर और ऊपर आकर तैरने में मदद मिलती है।

मेधा : जी खांडू अंकल, पता है।

खांडू : मेधा इन शॉक वेव्स के कारण मछलियों का ये स्विम ब्लैडर फट जाता है जिससे भीषण रक्तस्राव होता है और तुरंत मछली मर जाती है। ये मरी मछली या तो तली में बैठ जाती है या फिर पानी में उतराने लगती हैं

विवेक : अच्छा?

खांडू : अब ये लोग पानी में घुस कर उन्हें आसानी से इकठ्ठा कर लेते हैं।

मेधा : पर ये बांह और पंजा.....ये कोई दुर्घटना.....

खांडू : हां मेधा, चूंकि ये लोग स्थानीय चीजों से क्रूड विस्फोटक बनाते हैं इसलिए कभीःकभी ये हाथ में ही फट जाते है और परिणाम तुम देख ही रहे हो।

सुनीता : खांडू जी आप कहते हैं कि ये गैर कानूनी है, गैर कानूनी क्यों?

खांडू : सुनीता जी इस प्रकार से मछली पकड़ना पर्यावरण के लिए हानिकारक है। इसलिए ज्यादातर देशों में ये ब्लास्ट फिशिंग, साइनाइड फिशिंग, फिश ट्रोलिंग जैसे तरीके गैर कानूनी घोषित कर दिए गए हैं।

मेधा : क्यों ?

सुनीता : इस प्रकार के तरीकों में छोटीःबड़ी सब प्रकार की मछलियां और वे समुद्री जीव भी मर जाते है जिनकी इन मछुआरों को जरूरत भी नहीं होती है.... है न खांडू जी?

खांडू : जी सुनीता जी, इस प्रकार की गैर जरूरी छोटी मछलियों और अन्य समुद्वी जीवों को बाई कैच कहा जाता है। इनहें ये मछुआरे वहीं तट पर या पानी के अंदर ही छोड़ जाते है जिससे भारी पर्यावरण प्रदूषण होता है।

सुनील : समुद्रों में इससे मूंगे की कॉलोनियो को भयंकर नुकसान होता है। चूंकि इससे छोटी आयु की मछलियां भी मर जाती हैं इसलिए उपयोग में आने वाली बडी मछलियों की संख्या निरंतर कम होती जाती है।

विवेक : और ये साइनाइड फिशिंग?

खांडू : साइनाइड फिशिंग तुम्हारे एक्वेरियम के लिए जिंदा और साबुत मछलियां पकडने के लिए की जाती है। इसमें जहां मछलियां पकडना होता है वहां सोडियम साइनाइड का छिडकाव कर देते हैं। इससे मछलियां बेहोश हो जाती हैं और मछुआरे उन्हें पकड लेते हैं।

सुनील : पर इससे बहुत छोटी मछलियां व अन्य समुद्री जंतु मर भी जाते हैं, खांडूजी?

खांडू : समुद्रों में इससे मूंगे की पहाड़ियों को काफी नुकसान पहुंचता है इसीलिए तो अधिकांश देशों में ये प्रतिबंधित है।

विवेक : और ये फिश ट्रौलिंग, खांडू अंकल?

खांडू : ट्रौलर मछली पकड़ने का एक प्रकार का महीन जाल होता है। इसे समुद्र में पानी की सतह पर तैरती नाव या मछली पकडने वाले जहाज से बांध कर समुद्र की तली या तली के थोड़ा ऊपर तक पहुंचाया जाता है।

सुनील : इसे ही ड्रैगिंग कहते है न?

खांडू : हां सुनील जी, इसमें जरूरी मछलियों के अलावा बहुत सारे समुद्री जीव, छोटी मछलियां भी फंस जाती हैं जिन्हें मछुआरे बाहर ही फेंक कर चले जाते हैं। इससे मछलियों की जनसंख्या में तेजी से कमी आती है और बहुत सारे जीवःजंतु बेकार ही मारे जाते हैं।

सुनीता : आप ठीक कह रहे हैं, खांडू जी?

खांडू : सुनीता जी मछली एक हल्का और सुपाच्य मांसाहार माना जाता है। भारत में ही नहीं अन्य देशों में भी बहुत बड़ी जनसंख्या अपनी जीविका और पोषण के लिए मछलियों पर ही निर्भर करती है।

सुनील : अगर हम कम आयु की मछलियों को ऐसे ही नष्ट करते रहेंगे तो फिर बड़ी मछलियों की पैदावार कहां से होगी?

खांडू : तभी तो हमारा कहना है कि किसी जगह से एक बार मछलियां निकाल ली जाएं तो फिर कुछ दिनों तक वहां से मछलियां नहीं निकालीं जानीं चाहिए, जिससे छोटी मछलियों को बढने का मौका मिल सके।

सुनीता : हां खांडू जी, मछलियों के प्रजनन काल में भी मछलियों को निकालने पर प्रतिबंध होना चाहिए ताकि मछलियों की संख्या बढ़ सके।

खांडू : जहां जाल से मछली पकड़ी जाती है वहां हम ये राय देते हैं कि जाल के छेद इतने बड़े हों कि इनमें केवल बडी मछलियां ही फंसे और छोटी मछलियां निकल जाएं।

मेधा : इससे मछलियों की पैदावार कम नहीं होगी।

खांडू : हमारी संस्था मछली पकड़ने के गैर कानूनी तरीकों के लिए सख्त कानून बनाने की हिमायती है।

सुनील : जहां तक मेरी जानकारी है इसके लिए कानून तो है पर उस पर अभी सख्ती से अमल नहीं होता है।

(किसी व्यक्ति का प्रवेश, आगंतुक डा0 महेश बाधवा है।)

आगंतुक : आप लोग बोर तो नहीं हुए जीजा जी?

मेधा : नहीं महेश मामा, खांडू अंकल बड़े दिलचस्प आदमी हैं।

विवेक : और काफी जानकार भी.....

खांडू : नहीं डाक्टर साहब मैं तो इन्हें अपनी संस्था के बारे में बता रहा था। आप काम से खाली हो गए क्या?

डा0 महेश : अरे कहां खांडू जी ऐसा करिए आप मेरी गाड़ी ले जाइए.....जीजा जी दीदी और बच्चों को घुमा लाइए ।

खांडू : ठीक है मैं इन्हें जंगलों की सैर करा कर लाता हूँ।

मेधा : *(उत्साहित स्वर में)* तो क्या हम वहां जंगल में रहने वालों से भी मिल सकेंगे?

खांडू : हांःहां, क्यों नहीं?

सुनील : तो चलें?

(दृश्य परिवर्तन संगीत.....फेड्स आउट)

n" ;3

(ओपनिंग संगीत.....फेड्स आउट)

स्थान : जंगल

(जंगल की एम्बिएंस देने के लिए उपयुक्त ध्वनि प्रभाव जैसे चिडियों का चहचहाना, पेडों की सरसरहाट, इस बीच जीप की आवाज आती रहती है।)

विवेक : खांडू अंकल हम कहां जा रहे है.....यहां तो कितनी देर से जंगल ही जंगल चल रहा है बहुत देर से कोई बस्ती तक दिखाई नहीं दे रही है।

खांडू : विवेक यह यहां का सबसे घना जंगल है। यहां छोटेःछोटे समूहों में आदिवासी जातियां रहतीं हैं।

सुनीता : ये लोग अपनी ज्यादातर जरूरतों के लिए जंगल पर ही निर्भर रहते हैं न?

विवेक : अरे यह क्या खांडू अंकल यहां तो जंगल के सारे पेड़ जले हुए हैं। क्या यहां कोई बस्ती बसने वाली है?

खांडू : नहीं विवेक ये जंगल खेती के लिए ही साफ किया जा रहा है।

विवेक : खेती के लिए?

मेघा : इसे ही झूम खेती कहते है न, खांडू अंकल?

खांडू : हां मेघा इसमें जंगलों को जलाने के बाद खेती शुरू कर देते हैं। उर्वरकों के आभाव में दो चार साल में घटतेःघटते जब उपज काफी कम हो जाती है तो उस जगह को छोड़ दिया जाता है।

सुनीता : इस तरह से तो जंगलों का काफी नुकसान होता होगा?

खांडू : हां यहां की आदी जनजाति में इसी तरह से ही खेती करने का चलन है।

सुनील : खांडू जी आप की संस्था क्या इस के लिए भी कुछ करती है?

खांडू : जी सुनील, हम इन आदिवासियों को पर्माकल्चर, फोरेस्ट फार्मिंग, क्रोप रोटेशन, एग्रोफार्मिंग जैसी पद्दतियां सिखा रहे हैं ताकि इनकी जरूरतें भी पूरी होती रहें और प्रकृति की भरपाई भी होती रहे।

विवेक : पर्माकल्चर, ये क्या?

खांडू : विवेक वैसे तो पर्माकल्चर का अर्थ होता है परमानेंट एग्रीकल्चर, पर वास्तव में ये एक जीवन शैली है; कुदरत के साथ मिलकर जीने का तरीका है।

मेघा : वह कैसे?

खांडू : इसमें खेती को मानव की सारी आवश्यकताओं से जोड़ कर देखा जाता है। सारा ध्यान इस बात पर होता है कि किसी चीज का प्रयोग इस प्रकार से न हो कि कुदरत का संतुलन बिगड़े।

सुनीता : वह कैसे?

खांडू : आप देखो जंगलों में कैसे होता है? जंगली जानवरों का गिरा मलःमूत्र खाद की तरह काम आता है, जमीन पर गिरे पत्ते खाद बनाते हैं, पौधों से प्राप्त पत्तियां और फल वहां के जानवरों के काम आते हैं।

सुनील : यानि कुदरत को बिना कोई नुकसान पंहुचाए सब मजे से जीते रहते हैं।

खांडू : जी सुनील जी.....यही सब पर्माकल्चर के पीछे की सोच है।

विवेक : कैसे?

खांडू : इसमें खेती, इंसान की रिहायश, जानवरों और मछलियों का पालना सब एक ही जगह पर होता है। इसमें किसी क्षेत्र को कई जोन में बांटते हैं।

मेधा : कई जोन में?

खांडू : हां मेधा बीच के जोन में इंसान और उनके पालतू जानवर रहते हैं। इसके अगले जोन में मछलियां, मांस के लिए पाले जाने वाले जानवर या व्यवसाय के लिए पाले जाने वाले जानवर रखे जाते हैं।

विवेक : व्यवसाय के लिए पाए जाने वाले जानवर ?

खांडू : हां जैसे कि ऊन के लिए भेडें, घोड़े, मुर्गेःमुर्गियां, बकरियां, सुअर, बतखें.....

मेधा : ओ. के.

खांडू : इसके अगले जोन में शाक साब्जियां जो वहां रहने वालों के काम आएं और साथ ही आमदनी का जरिया भी बनें।

सुनीता : इंटेरेस्टिंग, इसके आगे?

खांडू : इसे अगले जोन में झाडी वाले औषधीय पौधे जैसे कि जिंसेंग ब्राह्मी या अन्य औषधीय पौधे या फिर चारे के लिए प्रयोग होने वाले पौधे जैसे बरसीम, करबी .....

सुनील : इसके साथ शायद अन्न उगाने वाले पौधे घरेलू जानवरों के खाने में प्रयोग होने वाले पौधे होंगे

खांडू : ठीक कहा सुनील जी इसके साथ फूलों वाले पौधे भी लगाए जाते है जो व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होते हैं।

मेधा : यानि साथःसाथ आमदनी का जरिया भी?

खांडू : हां मेधा, बाकी का जोन प्राकृतिक रूप से पैदा होने वाले पौधों या जंगल के लिए होता है जिनमें जंगली जंतु, पक्षी आदि निवास करते हैं। ये इस सारी व्यवस्था की तेज हवाओं और तूफान आदि से सुरक्षा करतें हैं।

सुनीताः बड़ा मुश्किल और अव्यवहारिक सा लगता है, ये सब.....

खांडूः आप लोगों ने इस तरह की व्यवस्था देखी नहीं है न, इसलिए ऐसा लग रहा है। पर्माकल्चर के जनक बिल मोलिसन और उनके ही शिष्य डेविड होमग्रेन ने जब तस्मानियां में पर्माकल्चर की शुरूआत की तो आश्चर्यजनक परिणाम मिले थे।

सुनीताः अच्छा!

खांडूः जहां एक ओर मछलियों की पैदावार खत्म हो चली थी, जंगल विलुप्त होने के कगार पर थे, धरती की पैदावार घट का एक चौथाई रह गई थी।

विवेकः फिर.....

खांडूः कुछ ही सालों में परिस्थितियां बदलना शुरू हो गईं। इसमें एक प्रजाति के बेकार अपशिष्ट दूसरी प्रजाति के लिए काम आ जाते हैं।

सुनीताः और प्रकृति का संतुलन बरकरार रहता है, संसाधनों की भरपाई होती रहती है।

मेधाः पर खांडू अंकल, जहां घने जंगल खड़े हैं वहां इतना सब कुछ विकसित कर पाना मुश्किल होता होगा?

खांडूः हां ऐसे स्थानों के लिए हमारी संस्था फोरेस्ट फार्मिंग की सिफारिश करती है और इसके तौर तरीकों को सिखाती है।

विवेकः फारेस्ट फार्मिंग, खांडू अंकल?

खांडूः विवेक इसमें जंगल साफ नहीं किया जाता वरन इसमें जंगल के छाया वाले बडे वृक्षों की इस प्रकार काटःछांट कर दी जाती है जिससे उनके नीचे प्रकाश पहुंचने लगे। फिर इनके नीचे

उगाने के लिए कुछ ऐसी फसलों या बनस्पतियों की खेती की जाती है जो इस छाया में भी पनप सकें।

विवेकः कौन सी फसलें खांडू अंकल?

खांडूः हुम्म.....जैसे कि मशरूम, जिंसेंग.....कुछ अन्य औषधीय पौधे.....इनके बाजार में अच्छे दाम मिलते हैं। इसके अलावा उसी के नीचे मुर्गी पालन, मछली पालन, घरेलू जानवरों, मांस के लिए पाले जाने वाले और व्यवसायिक जानवरों, का पालन भी किया जाता है।

सुनीलः इसे ही एग्रोफोरेस्टी कहते हैं न?

खांडूः जी सुनीता जी, इसके अलावा अन्य तरीके भी हैं जैसे कि मल्टीपल क्रॉप? क्रॉपःरोटेशन.....पर सब में ध्यान यही रखा जाता है कि प्रकृति का संतुलन न बिगड़े। कुदरत से हम जितना ले रहे हैं उसकी भरपाई भी करते चलें।

विवेकः ये मल्टीपल क्रॉप?

खांडूः ये तरीका उत्तराखण्ड में काफी प्रयोग में लाया जाता है। इसमें एक जगह पर कई प्रकार की फसलें एक साथ उगाते हैं जो कि अलग अलग समय पर तैयार होती हैं।

सुनीलः हांःहां एक जगह तो मैने 15:16 किस्म की फसलें एक साथ लगी देखीं हैं।

मेधाः खांडू अंकल आप कह रहे थे कि आप हमें जगल के निवासियों से भी मिलवाएंगे।

खांडूः हां मेधा मैं तुम्हें यहां की एक जनजाति अपातानी के ठिकानों पर ले चल रहा हूँ। ये जीरो वैली में रहते हैं।

विवेकः जीरो वैली?

खांडूः ये जगह निचले सुबानसिरी जिले में पड़ती है। यूनेस्को ने जीरो वैली को वर्ल्ड हेरिटेज साइट घोषित कर दिया है।

सुनीताः क्यों, ऐसा क्यो?

खांडूः अपातानी लोग प्रकृति के सानिध्य प्रकृति से तालमेल करके इतने चैन से रह रहे है कि ये सारी दुनियां के लिए एक मिसाल है।

विवेकः हम कितनी देर में वहां पहुंचेंगे?

खांडूः थोडा दूर है.....ईटानगर से करीब 170 किलोमीटर, पर आधा रास्ता तो हम तय ही कर आए है।

(जीप की आवाज मुखर होकर फेड होती है)

(दृश्य परिवर्तन संगीत.....फेड्स आउट)

n" ;¼4

(ओपनिंग संगीत.....फेड्स आउट)

स्थानःजीरो वैली

(ध्वनि प्रभावों से हरेःभरे जंगली स्थान की स्थापना करें। जीप चलने की ध्वनि पहले मुखर होकर फिर फेड होती है।)

खांडू: लो सुनील जी हम जीरो वैली तो पहुंच गए। आओ पहले मैं आप लोगों को यहां के लोगों की खेती का तरीका दिखाऊं।

सुनीताः ये यहां इन्होने यहां तालाब जैसे क्यों बना रखे हैं?

खांडू: सुनीता जी ये तालाब नहीं इनके धान के खेत हैं। ये मुख्यतः धान की खेती करते है और उसी खेत में मछली भी पालते हैं।

मेधाः अरे वाह एक पंथ दो काज..

खांडू: इतना ही नहीं इन खेतों की मेड़ों पर ये बाजरे ज्वार जैसी चीजें भी उगा लेते हैं और इस खेती में ये लोग किसी मशीन, हलःबैल या किसी जानवर का प्रयोग भी नहीं करते हैं।

सुनीलः अच्छा फिर इन खेतों की सिंचाई ..?

खांडू: इसके लिए ये लोग पहाड़ों से निकलने वाले सोतों का संरक्षण करते हैं ताकि इनको पानी की कमी न होने पाए।

सुनीताः वह कैसे खांडू जी ?

खांडू: ये अपने जंगलों की काफी जतन से रक्षा करते हैं। जगलों के उत्पाद ये इस प्रकार से लेते हैं कि जगलों को कोई नुकसान न पहुंचे। ये जंगल ही छाया देकर इनके पानी के सोतों को सूखने से बचाते हैं।

मेधाः काफी वैज्ञानिक दृष्टिकोण है इनका?

खांडू: हां, ये अपने इन खेतों से सिर्फ बड़ी मछलियों को ही पकड़ते हं और छोटी को छोड़ते जाते हैं ताकि वे बड़ी हो सकें।

सुनीलः और इनका रहनःसहन, खानाःपीना ?

खांडू: इनका रहनःसहन, खानाःपीना काफी सादा है। इनके खाने में चावल जरूर होता है। ये मसालों का प्रयोग नहीं करते हैं। और तो और ये कुछ पेड़ों की छाल और जड़ों से अपने खाने के लिए नमक भी खुद ही बनाते हैं।

मेधाः और इनके घर ?

खांडू: इनके घर जंगलों से प्राप्त पदार्थो, बांस या लकड़ी से बनते हैं।

सुनीताः मतलब इनके पास जितना और जैसा है उसी में गुजरःबसर करते हैं?

खांडू: गुजर बसर नहीं करते वरन मजे से स्वस्थ और प्रसन्न चित्त रहते हैं। इन्होने दिखा दिया है कि कुदरत से साथ मिलकर आराम से जिंदगी बसर की जा सकती है।

सुनीलः तब तो इनके पास हम तथाकथित शहरी लोगों को सिखाने के लिए बहुत कुछ है। आप हमें इनसे मिलवाएंगे नहीं?

खांडू: बिलकुल मिलवाएंगे, आज रात हम इनके साथ ही रहने वाले हैं। ये लोग बड़े मेहमान नवाज होते हैं।

(दृश्य परिवर्तन संगीत.....फेड्स आउट)

दृश्यः5

(ओपनिंग संगीत.....फेड्स आउट)

स्थानः महेश बाधवा के घर की बैठक

(खांडू, सुनीता, मेधा, विवेक और सुनील जंगल भ्रमण से वापस लौट आए हैं)

महेशः सुनीता दी, कैसा रहा आपका टूर?

सुनीताः कमाल का, महेश तुम्हारे खांडू जी एक दम परफेक्ट आदमी हैं। हम किस्मत वाले थे कि खांडू जी के साथ घूमने गए थे।

सुनीलः खांडू जी इज ग्रेट, ये यहां के चप्पेःचप्पे से बाकिफ हैं।

खांडूः क्यों शर्मिदा करते हैं सुनील जी। डाक्टर बाधवा हम सब लोगों का इतना खयाल रखते है। उसके एवज में मैं सिर्फ आज ये थोड़ी सी सेवा कर सका हूँ।

महेशः और मेघा क्या क्या देखा वहां?

मेधाः महेश मामा देखा नहीं सीखा..... सीखा कि कितने आराम से कुदरत के साथ जिदंगी काटी जा सकती है।

विवेकः कुदरत के साथ छेड़छाड किए बिना अपातानी लोग कितने मजे में हैं।

सुनीलः और हम उतनी दूर शहरों में बैठे हैं तो क्याःक्या नहीं चाहिए हमें.....वह भी पर्यावरण का..... संसाधनों का नुकसान करके।

खांडूः मैं तो कहता हूं सुनील जी कि शहर के विकसित और स्मार्ट लोगों को भी यह सब सीखना चाहिए।

सुनीताः सुनील, सीखना चाहिए नहीं सीखना पडेगा, नहीं तो सारा ढांचा ही चरमरा जाएगा।

मेधाः प्रकृति का संतुलन बनाए रखना हमारे बने रहने की शर्त है वरना.....

विवेकः हम कुदरत से लें उससे छीनें नहीं।

खांडूः आप लोगों के मुंह से ये सारी बातें सुनकर मुझे बड़ी खुशी हो रही है। लग रहा है मैं अपने प्रयास में सफल हुआ।

(दृश्य परिवर्तन संगीत.....फेड्स आउट)

दृश्यः6

(ओपनिंग संगीत.....फेड्स आउट)

स्थानः विवेक और मेघा का घर

विवेकः मेधा दीदी आज मेरे यहां सर ने पूछा कि हम छुट्टियों में कहां गए थे तो मैने उन्हें सारी कहानी बताई।

मेधाः अपातानी लोगों के बारे में भी?

विवेकः हां, तब तो उन्होंने मुझे प्रिंसीपल सर से मिलवाया। वे ये सब सुनकर इतने इंप्रेंस हुए कि एक वे स्कूल में पर्यावरण जागरूकता सप्ताह मना रहे हैं। उसमें हमारे द्वारा खीचे गए फोटो लगाए जाएंगे..........एक प्रदर्शनी भी लगेगी। इस बात पर भी चर्चा होगी कि कैसे हम प्रकृति की निरंतरता बनाए रख सकते हैं।

(सुनील का आगमन)

सुनीलः क्या बातें चल रही हैं विवेक?

मेधाः पापा, विवेक ने अपने स्कूल में हमारी अरूणांचल प्रदेश की यात्रा के बारे में बताया तो इसके प्रिंसीपल सर प्रकृति और उसके संसाधनों के प्रयोग पर एक जागरूकता सप्ताह मना रहे हैं।

विवेकः पापा, उसमें आप सब लोग भी आमत्रित होंगे आखिरी दिन एक नाटक भी होगा.........मैं सबके लिए पास ले आया हूँ।

सुनीलः ठीक है, तो हम सब चलेंगे।

दृश्य परिवर्तन संगीत...फेड्स आउट)

n'; %7

(ओपनिंग संगीत...फेड्स आउट)

स्थान : एक सभागार

(सभागार में दर्शकों का कोलाहल, माइक आदि की टेस्टिंग हो रही है।)

विवेकः लो पापा हम आ गए नाटक अब शुरू होने वाला ही है, चलो यहीं बैठ जाते हैं। मेधा दी आप इधर आ जाओ।

(सभागार के जन समुदाय का शोर मुखर होता है इसके बाद सभागार के कार्यक्रम की ओपनिंग का संगीत बजता है जो एक बार तीव्र होकर रुक जाता है और सभागार में शांति हो जाती है।)

सूत्राधारः इस सांस्कृतिक कार्यक्रम में पधारे आप सब दर्शकों का स्वागत है। स्वागत है आपका इस लघु नाटिका में जिसका नाम है 'करिए कल की फिक्र'। तो मित्रों स्वागत कीजिए इन लघु नाटिका के कलाकारों का और आनंद लीजिए आज की नाटिका 'करिए कल की फिक्र' का।

(दृश्य परिवर्तन संगीत...फेड्स आउट)

(पृष्ठभूमि में बजते हल्के संगीत के साथ एक पात्र प्रवेश करता है)

पुरुष स्वर : (गाते हुए)

eS l`f"V dk lcls fodflr izk.kh] eS bUlkuA
eS iM+rk gw¡ lcls Hkkjh] eS lcls cyoku]
eS lcls cyokuA
esjk gh lkjk vEcj] esjh gh lkjh /kjrh

lkxj ejs] e#Fky ejs] pyrh gS ejh ejth
ftldk pkgw mls feVkÅ] e>dk jkds dkSu\
eSa viuh ejth dk ekfyd] e>dks jksds dkSu\

(अट्ठहास)

e>dks jksds dkSu] gS dkbZ----

एक स्त्री स्वर : T;knk er rq Mhxsa gkWd] ej[k gks tk ekSu

पुरुष स्वर : कौन, कौन बोला मुझे मौन होने के लिए?

dkSu gS rw ,s finnh] vk eSa idMw rq>ks dkSu
eSa iMrk gw lc ij Hkkjh] eSa lcls cyoku

स्त्रीस्वर : बलवान! अरे इंसान तू तो है नादान।

पुरुष स्वर : अरे तू...........तू है कौन?

(तरह:तरह के जानवरों की आवाजों को कोलाज जो तीव्र होकर पृष्ठभूमि में चली जाती है)

पुरुष स्वर : अरे....अरे रे कौन...कौन हो तुम? इतने सारे लाखों की तादाद में... अरे उससे भी ज्यादा... अरे पिद्दी कौन हैं ये?

स्त्री स्वर : vkS bl iFoh dk ykxk] yks lquks gekjh tqckuhA
ge pys x, nqfu;k ls] jg xbZ gekjh dgkuhA
jg xbZ gekjh dgkuhA

(अवसाद संगीत)

पुरुष स्वर : *(डरा हुआ स्वर, स्वगत)* कौन है ये ....ये तो भारतीय चीता है...ये तो समुद्री जीव ये...रेगिस्तानी जीव *(साहस बटोर कर प्रकट में)* ....क.....क....कौन हो तुम?

स्त्री स्वर : अरे...इंसान, हम अब हैं नहीं, थे........................तेरी ही तरह, इस पृथ्वी के अधिकारी...

पुरुष स्वर : मतलब?

स्त्री : अब मतलब पूछता है? आज हम नहीं हैं, ये सब तेरी ही करतूत है।

पुरुष : मेरी करतूत, पर आप सब हैं कौन?

(जानवरों की आवाजों का कोलाज एक बार मुखर होकर पृष्ठभूमि में चला जाता है)

स्त्री : हम............................हम हैं उन प्रजातियों के नुमाइंदे जो तेरी वजह से इस दुनियां से विलुप्त हो गईं...ये पौधे, ये जंतु...ये पक्षी, ये मछलियां ये समुद्री जीव...

पुरुष : *(व्यंग से)* लो सुन लो................ये सब मेरी वजह से विलुप्त हो गए.......अरे कैसे? तुम विलुप्त हो गए इसमें मेरी क्या भूमिका है? अरे मैं खुद जीवों की एक प्रजाति का नामाइंदा हूँ।

स्त्री : वह तो तू है पर एक बात गलत हुई।

पुरुष : वह क्या?

स्त्री : वह ये कि कुदरत ने तुझे इस सृष्टि का सबसे विकसित मस्तिष्क दे दिया।

पुरुष : *(अभिमान भरा स्वर)*:वह तो है...पर इसमें बुराई क्या है?

स्त्री : है, बुराई है इतने विकसित मस्तिष्क में ही स्वार्थ, लोभ, सत्ता का दुरुपयोग जैसी बुराइयां समा सकती हैं।

पुरुष स्वर : देखो बातों को उलझाओ मत। खुल कर बताओं कि प्रजातियों के विलुप्त होने में मुझ मानव की क्या भूमिका है?

स्त्री : तो सुन, तूने अपने इस्तेमाल के लिए हम सबके बसेरे उजाड़ दिए। हमारा वातावरण जिसमें हम चैन से जीते थे वह नष्ट कर दिया।

पुरुष : वह कैसे?

स्त्री : तूने अपनी खेती के लिए जंगल काट कर जमीन साफ की, शहर और गांव बसाने के लिये हरी:भरी धरती को बंजर बनाया, उस पर कंक्रीट के जंगल खड़े कर दिए...

पुरुष : परंतु ....

स्त्री : *(बात काट कर)* जंगलों में आग लगाई, धरती को खोद कर खनिज निकाले, समुद्रो में मछली पकड़ने के लिए ट्रौलिंग की.....

(जीवों की आवाजों का कोलाज मुखर होकर पृष्ठभूमि में चला जाता है)

पुरुषः *(जोर दे कर)* पर उससे तुम्हारे विलुप्त होने का क्या सम्बंध है?

स्त्री स्वर : *(जोर दे कर)* सम्बंध है, तूने कभी सोचा कि जिन जगहों का स्वरुप तूने बदल डाला, वहां सैकड़ों किस्म के पेड़:पौधे, हजारों किस्म के जीव:जंतु, लाखों किस्म के जीवाणु और एक कोशिकीय प्राणियों का आवास था जो तूने नष्ट कर दिया।

(जीवों की आवाजों का कोलाज मुख होकर पृष्ठभूमि में चला जाता है)

पुरुष : ij ;s ejh etcjh gS---
ejs fy, t:jh gSA

एक युवक का तेज स्वर : वाह मजबूरी...जानवरों का शिकार भी तेरी मजबूरी है...तूने शिकार कर कर के भारतीय चीते की नस्ल मिटा दी...किस मजबूरी में? सहारा रेगिस्तान के चीतों की नस्ल खत्म हो रही है। तेरे कारण बाघ भी शायद दुनियां से विदा हो जाएं, और तू कहता है मजबूरी...

कई स्त्री पुरुष स्वरों का कोरसः e[k ekuo ge l g r] lkFk gekj jguk lh[kA
ge u jg rk r u jgxk] ge cpkdj thuk lh[kA

(जीवों की आवाजों का कोलाज मुखर होकर पृष्ठभूमि में चला जाता है)

पुरुष : *(व्यंग से)* मतलब ये कि हम जंगली बने रहते...न समाज बनाते, न बस्तियां बसाते, न विकास करके उद्योग धंधे लगाते, तुम्हारी तरह कुदरत के रहमो करम पर रहते तब ठीक था...यहीं न? क्या तर्क है

(हंसता है)

स्त्री : तूने बस्तियां बसाईं....ठीक, तूने उद्योग धंधे लगाए ठीक...ये तो विकास है। इसमें कुछ न कुछ विनाश होना था..उतना तक तो बर्दाश्त था।

पुरुषः *(नकल करते हुए)* इतना तक तो बर्दाश्त था...और इससे अलग मैंने क्या किया?

स्त्री स्वर : अरे मानव तेरी प्रजाति जो अपनी आबादी इतनी तेजी से बढ़ाती जा रही है उसका क्या? पिछली शताब्दी को ही ले लो तुम लोग कितने थे और अब कितने गुने हो गए?

पुरुष : तो इससे तुम्हें क्या?

स्त्री : अरे! मुझे इससे सब से ज्यादा मतलब है। तुम संख्या में जितने बढ़ोगे हमारे आवासों और वातावरण का उतना ही ज्यादा विनाश करोगे।

पुरुष : मतलब तुम्हारा विनाश रोकने के लिए हमें अपनी आबादी बढ़ने से रोकनी होगी?

स्त्री : हां...बिलकुल, ठीक समझा तू।

(जीवों की आवाजों का कोलाज जो मुखर होकर पृष्ठभूमि में चला जाता है)

एक और पुरुष का गूंजता स्वर : और अपनी आरामतलबी घटा, कुदरत के साथ रहना सीख...कुदरत को मिटाकर कितने दिन चल पाएगा?

पुरुष : ए, तुम कौन? म...म....मतलब आपकी तारीफ?

दूसरे पुरुष का स्वर : *(तेज स्वर मे)* ए अभिमानी मानव, तू मुझको पेड़ों का नुमाइंदा जान।

पुरुष : ओहो वन देवता..... *(व्यंग से)* कहिए....क्या हमारे सुखःचैन आपके भी आंखों देखे नहीं सुहाते? आपको भी इससे कष्ट है।

वन देवताः है और बहुत है। तू सुन और सारे मानव सुनें.....और ध्यान से सुनें। मैने आप सबको पाला है, सबकी सुरक्षा की है। आपने जब जो चाहा है, दिया है। फल, शहद, लकड़ी, गोंद, पत्ते जो चाहा तुमने, मैने दिया है। पर तुम्हारी तो मांगे खत्म ही नहीं होतीं, तुम्हारा लालच तो शांत ही नहीं होता। ये क्या, इतना लेने पर आ गए कि हमें उजाड़ ही दिया। मेरी भी देते जाने की सीमा है। हम खत्म होते जा रहें हैं पर हमारे पेड़ों पर चलने वाले तुम्हारे आरों, की धार मद्धिम नहीं हुई है।

पुरुष : पर लकड़ी तो हमारी जरूरत है।

वन देवताः सिर्फ अपनी जरूरत देखी, हमारी जरूरत के बारे में सोचा है कभी? अरे जब हम नही रहेंगे तब क्या होगा तुम्हारी जरूरतों का?

पुरुष : पर फर्नीचर तो.....?

वन देवताः अरे फर्नीचर के लिये लकड़ी लेने ने हमारा इतना नुकसान नहीं किया जितना जलाने के लकड़ी लेने की तुम्हारी आदत ने किया है। जलाने के लिये लकड़ी काटःकाट कर तुमने जंगल का बहुत सारा हिस्सा मिटा डाला। फर्नीचर तो इसके बाद आता है हमें मिटाने में। अरे हमें बचाना है तो बदलो, बदलो अपनी आदतें।

पुरुष : आखिर क्या करें हम ?

वन देवताः: तुम्हारी खेती के उत्पादों में कितना कुछ बचता है जो तुम ईधन के काम ले सकते हो। अरहर की लकड़ियां, सरसों के तने, फूस , पुआल , गोबर के कंडे हैं, इन्हें प्रयोग करो न। थोड़ा सा

हमें बख्शो। हमें मौका तो दो कि एक बार फिर बढ़ सकें, इस काबिल हो सकें कि फिर से तुम्हें वह दे सकें जो तुम्हें हमसे चाहिए।

पुरुष : पर फर्नीचर.....?

वन देवताः जरूरी है फर्नीचर लकड़ी से बने? बांस और केन से भी बहुत सारा फर्नीचर बन सकता है, उसको इस्तेमाल कर। अरे कहींःकहीं तो लोग केवल बांस के सहारे अपनी आधी से ज्यादा आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहे हैं और तुम्हें अभी भी फर्नीचर के लिए लकड़ी चाहिए?

पुरुष : (क्रोध में) बस, बस करिए वन देवता.....

वन देवताः: सच्चाई सुनने पर तुझे क्रोध आता है। गुस्सा मुझे भी आता है जब तू मुझमें आग लगाता है..

पुरुष : पर वह तो.....

वन देवता : क्या वह तो... खेती के लिये जमीन चाहिए या रहने को जगह चाहिए तो जंगल ही जलाता है तू। तेरी झूम खेती; जंगल जलाया, सिर्फ एक बार खेती की और छोड़ कर चल दिया। जंगल में पिकनिक मनाने गया कैम्पफायर किया और फिर जलती आग छोड़ आया। सिगरेट पी, ठूंठ फेंक दिया झाड़ी में। पहले तो झाड़ी जली फिर मीलों जंगल जल कर स्वाहा। और तो और प्रशासन से नाराज है तो जंगल में आग लगा दी, आपस में लड़ाई हो गई तो दूसरे के हिस्से के जंगल में आग लगा दी। मैं पूछंता हूँ ये सब क्या है ? हम वनों के लिए तुझ इंसान में कोई भावना है कि नहीं? हम जो तुझे रोटी देते हैं.....जिंदगी देते हैं.....

पुरुष : मगर....

वन देवताः कोई अगरःमगर नहीं.. कान खोल कर सुन...अपना विनाश रोकना चाहता है तो हमारा विनाश रोक। वरना पछताएगा, खत्म हो जाएगा तू.....खत्म हो जाएगा....तू.... तू...तू

(आखिरी शब्द प्रतिध्वनित होते रहते हैं)

एक बच्ची का स्वर : कहां है इंसान.....कहां है इंसान.....इधर आ....सामने तो आ।

पुरुष : क्यों क्या हुआ?

बच्ची : तो तू है, जो समुद्रों में अंधेर मचाए है?

पुरुष : *(व्यंग्य से)* अच्छा, वैसे आप हैं कौन, जापानी गुडिया?

बच्ची : *(तेज स्वर में)* जापानी गुडिया नहीं...जोश की पुड़िया...समुद्री जीवों की प्रतिनिधि..

पुरुष : *(व्यंग से)* अच्छा समुद्री जीवों की प्रतिनिधि जी...समुद्रों में हम मानवों ने कौन सा अंधेर मचाया?

बच्ची : एक हो तो गिनाएं, समुद्र तो तेरे लिए कूड़ा घर है, कचरा तू वहां डंप करे...रेडियोधर्मी उत्पाद तू उसमें फैलाए, तेल तू उसमें बहाए और जब तू मछलियां पकड़ता है न...

पुरुष : *(चिढ़ कर)* तो अपने लिए समुद्रों से मछलियां पकड़ना भी गुनाह हो गया.....हद है...

बच्ची : हदें तो तू पार चुका है.....जिस तरह तू मछलियां पकड़ता है वह तो गुनाह ही है।

पुरुष : क्यों?

बच्ची : मछलियां पकड़ने के लिए समुद्रों में जो ट्रोलिंग की जाती है जानते हो उसमें समुद्र की तली को कितना नुकसान होता है?

पुरुष : वह कैसे?

बच्ची : ऐसा करके तूने मूंगे के पहाड़ के पहाड़ नष्ट कर दिए। इसके अलावा और भी हैं तेरे कारनामे... .कहां तक गिनाऊं।

पुरुष : बता, बता, आगे बोल.....मैं भी तो सुनूं।

बच्ची : मछलियां पकड़ने के लिए तू जो कभी झीलों में, नदियों में समुद्रो में, विस्फोट करता है, कभी पानी में जहर मिलाता है, उससे समुद्री जीवों का कितना नुकसान होता है, तुझे कुछ मालूम भी है?

पुरुष : उससे साथःसाथ छोटी मछलियां और वह समुद्री जीव भी मारे जाते है जिनकी तेरे लिए कोई उपयोगिता नहीं थी....तू उन्हें कूड़े के ढ़ेर की तरह समुद्र तट पर सड़ने के लिए छोड़ जाता है... ...जबाव दे क्यों?

(तेज हवा का ध्वनि संकेत जो फेड होता है बाद में चिड़ियों का कलरव सुनाई देता है)

पुरुष : आप, अब आप कौन हैं?

एक स्त्री स्वर : अरे...इंसान मैं वह हूं जिसका तू सबसे बड़ा अपराधी है।

पुरुष : मतलब?

स्त्री स्वर : अरे मूर्ख प्रकृति हूं मैं.....कुदरत

पुरुष : प्रकृति देवी? अच्छा अब मैं आपका भी अपराधी हो गया? क्या जो मैने किया उसके लिए मैं दोषी हूँ? मैने सभ्यता के विकास के लिए उद्योगःधंधे बढ़ाए, कलःकारखाने लगाए, ऐशो आराम के साधन जुटाए। आज जिंदगी कितनी सरल हो गई है। इस विकास के लिए क्या मैं दोषी ठहराया जाऊंगा?

स्त्री स्वर : विकास की ओट लेकर तू अपने दुष्कर्मों को छुपाना चाहता है। तूने अंधाधुंध जंगल काटे, किस विकास के लिए? तू जिस जगह से पेड़ काटता था वहां कभी तूने एक पौधा लगाने के बारे नहीं सोचा? पेट्रोल का तू इतना दुरूपयोग करता है कि एक तरफ तो इस ईधन के खत्म होने के दिन नजदीक आ गए दूसरी ओर हवा में जहर घुलता जा रहा है यह सब विकास के लिए कर रहा है?

पुरुष : *(चिढ़ कर)* तो क्या आदिम युग में लौट जाऊं? बैलगाड़ी पर चलने लगूं?

स्त्री स्वर : बैलगाड़ी छोड़, तुझे तो पैदल चलना पड़ेगा। ये पेट्रोल, ये कोयला, ये खनिज तेरे साथ लंबे समय तक नहीं रहने वाले हैं। अपनी आदतें बदल। संसाधनों की फिजूलखर्ची रोक....

पुरुष : मगर कैसे?

स्त्री स्वर : ऐसे ईंधनों का विकास कर जो लंबे समय तक तेरा साथ दें, जैसे सौर ऊर्जा, वायु ऊर्जा। वाहनों का प्रयोग तभी कर जब बहुत जरूरत हो। चार पड़ोसी एक ही तरफ को जा रहे हों तो एक ही वाहन में चले जाएं। सीसा रहित पेट्रोल और कम गंधक वाला डीजल अपने वाहनों में प्रयोग कर। जो वाहन पुराने हैं और ज्यादा ईंधन खाते हैं, ज्यादा प्रदूषण फैलाते हैं, उनका प्रयोग बंद कर।

पुरुष : पर क्या मैं यह सब करता नहीं?

स्त्री स्वर : पर इसके साथःसाथ विकास के बहाने जो ये नएःनए उत्पात करता है वह विकास नहीं विनाश है, विनाश, उन्हें बंद कर।

पुरुष : पर.....

स्त्री स्वर : तू जानता है मेरी अदालत में कोई माफी नहीं होती। सजा जरूर मिलती है। पर यह सजा जितनी कम हो उतना ही अच्छा है। आज मैं प्रकृति, इस दुनियां के सारे इंसानों को चेतावनी देती हूं कि सुधर जाएं मेरे मिल कर जीना सीखें वरना एक दिन ये मानव सभ्यता ही समाप्त हो जाएगी ?

पुरुष : (आश्चर्य से) क्या, हमें इतना बड़ा श्राप मत दो प्रकृति देवी (गिड़गिड़ा कर) तुम तो हम सब की मां हो...

स्त्री स्वर : मां हूं तो मेरी गोद में बैठ.....मेरे आशीर्वाद के साए में रह। बेटा है तो मेरे साथ बेटे की तरह रह.....दुश्मन की तरह नहीं। मैं मां हूं तो इस मां की फिक्र कर... नही तो.....

(आखिरी शब्द प्रतिध्वनित होते रहते हैं)

पुरुष : *(दुखी स्वर में)* ओह...ओह...ओह, क्या करूं मैं..... मैं सचमुच अपराधी हूं ..... मैं जिस पेड़ पर बैठा हूं उसी को काट रहा हूं .....खुद को मिटा रहा हूं मैं..... फिर क्या करूं मैं..... क्या उपाय है इसका? क्या ऐसे ही एक दिन मानव सभ्यता समाप्त हो जाएगी ?

(फूटःफूट कर रोता है)

(मेधा और विवेक मंच पर आते हैं)

दोनोः *(समवेत स्वर में)* नहीं मानव सभ्यता कभी समाप्त नहीं होगी।

मेधाः मैं मेधा....

विवेकः मैं विवेक....

दोनोः: *(समवेत स्वर में) .....*आप सब को ये विश्वास दिलाते हैं।

पुरुष : क.....कौन हो तुम दोनो?

दोनोः: कुदरत के दोस्त।

विवेकः हम पर संकट क्यों आया क्योंकि हमने कुदरत का संतुलन बिगाड़ दिया। हम उतने पेड़ काटें जितनी हमें जरूरत है। जहां से हमने पेड़ काटे हैं वहां नए पौधे लगाएं।

मेधाः इस तरह की विधियों पर काम किया जाए कि हमारे कारखाने कम से कम प्रदूषण फैलाएं। हर आदमी अपने आसःपास के पर्यावरण के बारे में सोचे।

विवेकः जरूरी है कि हम ऊर्जा के अन्य स्रोतों को अपनाएं।

मेधाः पर इसके लिए इसी क्षण सोचना होगा। अगले पल से उस पर अमल करना होगा। इसे कल तक के लिए भी छोड़ा नहीं जा सकता।

विवेकः सारी परेशानियों की जड़ है जनसंख्या, हमारी बढ़ती जनसंख्या। अकेली यही समस्या सुलझा लें तो आधी से ज्यादा समस्याएं अपने आप सुलझ जाएंगी।

मेधा, विवेक और मानव बने पात्र के अतिरिक्त सारे पात्र :

dy ge ugh jgx rkA
lkpk D;k gkxk nfu;k dk]
dy ge ugh jgx rkA
ugh cpxk /kjk ij thou]
dy ge ugh jgx rkA

(आखिरी पंक्ति प्रतिध्वनित होती रहती हैं)

मेधा, विवेक और मानव बन पात्र (बारी बारी से): ckr rEgkjh le> x, g
djr g ge lc ; oknkA
re u jgk ; dHkh u gkxk]
djr g ge lc ; oknkA
ftEenkjh le> x, g]
ge lc u g fd;k bjknkA
ftruk ge dnjr l yx]
mruk mldk okil nxA
vkj bl fQj l c<u dk]
Hkjikbi dk ekdk nxA
; lryu cuk,x ge]
oknk fd;k fuHkk,x geA
oknk fd;k fuHkk,x geA
rel g ge] rel g ge

(आखिरी पंक्ति प्रतिध्वनित होती रहती हैं)

(दर्शक तालियां बजाते हैं)

(दृश्य परिवर्तन संगीत.....फेड्स आउट)

सूत्रधारः तो दोस्तो आपने सुना उस खतरे के बारे में जो हम सब के सामने मुंह बाए खड़ा हैः घटते जाते और खत्म होते जाते संसाधनों के बारे में। इसके लिए आज से, अभी से कुछ करना होगा क्योंकि कल तो काफी देर हो चुकी होगी। लेकिन केवल सरकार के किए या किसी एक के किए ये नहीं होने वाला है। सारे समुदाय को, पूरे समाज को, हर एक मानव को इसमें एकजुट होकर लगना पड़ेगा तभी ये समस्या सुलझ सकेगी। अच्छा चलूं। मगर ये सफर जारी रहेगा।

अगले सप्ताह आज के दिन इसी समय हम और आप फिर साथःसाथ होंगे रेडियो धारावाहिक (रेडियो धारावाहिक का नाम) की अगली कड़ी में जिस में चर्चा होगी (अगले एपीसोड का रीकैप)